यस्याः परं कृपया जाता समुज्ज्वला मतिः।
ज्ञानाय कार्यसिद्धये च नौम्यहं सरस्वतीम्।।
वीणां परिवाद्ययन्तीं पद्मासने या संस्थिता।
हे देवि प्रसीद् त्वं भजाम्यहं सर्वदा।।

शोध निर्देशक का प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि अमृत लाल ने वाल्मीकि रामायण का समालोचनात्मक अध्ययन'' शोध विषय पर संस्कृत विभाग, काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ज्ञानपुर, सन्त रविदास नगर भदोही केन्द्र से मेरे निर्देशन में वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यलाय जौनपुर के नियमानुसार शोध–कार्य पूरा किया है। इनका शोध–प्रबन्ध नितान्त मौलिक है।

अग्रसारित

13/3

प्राचार्य

काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
ज्ञानपुर सन्त रविदास नगर भदोही

शोध निर्देशक

डॉ० भारतेन्दु द्विवेदी

डॉ० भारतेन्दु द्विवेदी
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
संस्कृत विभाग
का.न.रा.स्ना. महावि0 ज्ञानपुर
सन्त रविदास नगर भदोही
उ0प्र0

आत्मनिवेदन

वाल्मीकि रामायण भारतवर्ष का प्राचीनतम राष्ट्रीय महाकाव्य है। जिनमें भारतीय आर्यों के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक विचारों का वर्णन मिलता है। एक धर्म ग्रन्थ के रूप में इस महाकाव्य को जो स्थान भारतीय जन–जीवन में प्राप्त हुआ है, वह अन्य किसी ग्रन्थ को नहीं मिल सका है। किन्तु रामायण एक केवल कोरा धर्म–ग्रन्थ ही नहीं बल्कि इसमें प्राचीन भारतीय संस्कृति के एक महान युग से सम्बन्धि ज्ञान का अनमोल एवं अगाध्य भण्डार छिपा है।

निष्कलंक, निरंजन, निर्विकल्प, निराख्यात, पावन, अद्वितीय नारायण दशरथ नन्दन के रूप में अवतरित हुए। महर्षि वाल्मीकि ने स्वयं उद्घोषित किया है– 'वेद सम्मित यह रामायण पवित्र, पापहरण तथा पुण्यप्रद है। सर्वश्रुति मनोहर यह काव्य धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष रूपी गुणों से युक्त तथा इनका विस्तारपूर्वक्क प्रतिपादन है। यह महाकाव्य आयु तथा पुष्टि प्रदान करने वाला है।'

भागवान विश्वनाथ जी की कृपा का ही यह प्रतिफल है कि अनेक कठिना–ईयों के बावजूद अन्ततः मेरी शोध यात्रा सम्पन्न हो सकी है। प्रभु के चरणों में मेरा कोटि–कोटि नमन है।

सर्वप्रथम सत्य, ज्ञान एवं आनन्द के स्वरूप परममूल्य राम के प्रति मैं अपनी श्रद्धा समर्पित करता हूँ। अब मैं वाल्मीकि द्वारा निर्दिष्ट प्रत्यक्ष देव अपने गुरुत्रय माता, पिता तथा समस्त गुरुजनों के प्रति अपनी श्रद्धा अर्पित करता हूँ। ये हमारी प्रेरण के अजस स्रोत रहे हैं, मैं उन समस्त विद्वानों के प्रति अत्यन्त कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, जिनके द्वारा उद्भासित तथ्यों का मैंने अपने शोध–प्रबन्ध में पिरोया है।

अध्ययनकाल में ही मुझे इस शोध–प्रबन्ध के निर्माण की प्रेरणा मिली। जिसके अन्तर्गत मैंने संस्कृत साहित्य के अनेक महाकाव्यों का अध्ययन किया और महर्षि वाल्मीकि के आदिकाव्य रामायण के प्रभाव से प्रभावित हुआ। इसीलिए मैंने आदिकाव्य रामायण पर शोधकार्य करने का निर्णय लिया। **"वाल्मीकि रामायण का**

समालोचनात्मक अध्ययन'' यह विषय लेकर मैंने शोधकार्य किया और यह निर्णय मेरे जीवन में मूर्त हुआ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को मूर्त रूप प्रदान करने में मुझे जिन गुरुजनों, अत्मीय स्वजनों के बहुमूल्य सुझाव, सहयोग एवं प्रोत्साहन मिला है, उनके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करना मैं अपना पुनीत कर्त्तव्य समझता हूँ।

सर्व प्रथम मैं अपने गुरु एवं निर्देशक परमादरणीय डॉ0 भारतेन्दु द्विवेदी विभागाध्यक्ष–संस्कृत काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ज्ञानपुर के चरणों में कोटिशः वन्दन करता हूँ, जिनकी वात्सल्यमयी प्रेरणा, निरन्तर सहयोग एवं प्रोत्साहन के कारण ही इसे पूर्ण करने में समर्थ हो सका। आपका निर्देशन ही मेरी शोध–यात्रा का **''पाथेय''** रहा, यह शोध–प्रबन्ध आपके सतत् प्रेरणाओं और आशीर्वाद का ही प्रतिफल है, जिसे कृतज्ञता ज्ञापन की परिधि में सीमित करना कथमपि सम्भव नहीं।

इसी प्रसंग में वरिष्ठ गुरुजन एवं प्राध्यापकगण जिनसे मुझे आशीर्वाद, शुभकामनायें एवं बहुमूल्य सुझाव मिले हैं, उनके प्रति मैं आभारी हूँ। विशेष रूप से डॉ0 रामसूरत यादव प्राचार्य, राजकीय महिला महाविद्यालय देवरिया, डॉ0 गौरी शंकर बिन्द प्राचार्य पी0जी0 कालेज, मऊ, डॉ0 क्षमा शंकर पाण्डे विभागाध्यक्ष–हिन्दी के0एन0पी0जी0 कालेज ज्ञानपुर, डॉ0 सविता द्विवेदी, डॉ0 रामकरन मिश्र प्राचार्य, डॉ0 कीर्ति कुमार सिंह के0एन0पी0जी0 कालेज ज्ञानपुर, डॉ0 शशि किरन मौर्य निदेशालय इलाहाबाद, डॉ0 किरन शर्मा के0एन0पी0जी0 कालेज ज्ञानपुर, डॉ0 ए0के0 शाही प्राचार्य, डॉ0 सविता के0एन0पी0जी0 कालेज ज्ञानपुर, डॉ0 रचना डॉ0, जय प्रकाश यादव काशी विद्यापीठ वि0वि0 वाराणसी, डॉ0 आमोद कुमार झा नोएडा दिल्ली आदि गुरुओं का मैं ऋणि हूँ, यह शोध–प्रबन्ध आपके आशीर्वाद व सहयोग के परिणाम स्वरूप पूर्ण हो सका।

करुणा की प्रतिमूर्ति वात्सल्य व दया की प्रतिमूर्ति रूपा मेरी पूजनीया माँ श्रीमती सरस्वती देवी एवं पूज्य पिताजी श्री पारसनाथ के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने हेतु मेरे पास कोई शब्द नहीं है। जिन्होंने अपार कष्ट सहन करते हुए दुःख

रुपी सागर के आँसुओं को अपने अगाध हृदय में समेटे हुए अपने दुःखों का मुझे एहसास न कराते हुए, अपने हृदय से स्नेहासक्ति व ममता रूपी आशीर्वाद सम्बल प्रदान कर सर्वदा ज्ञान के अर्जन की प्रवाहमयी प्रेरणा दी है। आपके चरणों में कोटिशः वन्दन समर्पित करता हूँ।

इसके अतिरिक्त मैं अपने बडे भाई डॉ0 अंगलेश कुमार, पी–एच0डी0 कामर्स एवं भाभी श्रीमती विमला देवी जिन्होंने शोध कार्य पूर्ण करने में ही नहीं, बल्कि मेरे दुःख में भी निरन्तर मेरे साथ रहे। शब्दों द्वारा आभार व्यक्त करना तो मेरे समझ में इसकी महत्ता को कम ही आंकना होगा, बस इतना ही कहना चाहूँगा की शोध प्रबन्ध जिस किसी भी रूप में बन पड़ा है उसके मूल में इनका पूर्ण सहयोग रहा। जिन्होंने व्यस्तता के बावजूद भी मुझे समय दिया तथा मेरी हर कठिनाइयों में मेरे मनोबल को बनाये रखा। इन्हें श्रद्धा व आदर के साथ नमन करता हूँ। मैं अपने पिता तुल्य श्वसुर श्री दिवाकर प्रसाद, यू0पी0 पुलिस तथा सासु माँ श्रीमती बैजन्ती देवी के श्रीचरणों में हृदय से वन्दन करता हूँ।

मैं अपनी धर्म पत्नी श्रीमती संगीता देवी जैसी भार्या को पाकर अपने आप को गौरवान्वित महसूस करता हूँ जिसने मेरे शोधकार्य में वर्तनी व चिन्ह आदि का संशोधन कराकर सहयोग प्रदान किया। अतः मैं इनके प्रति आभार प्रकट करना अपना पुनीत कर्तव्य समझता हूँ।

मैं अपने छोटे भाई विनोद कुमार, विरेन्द्र कुमार तथा धीरेन्द्र कुमार व बहन श्रीमती श्वेता देवी, चंचला और रानी भतीजे अनुराग, अनुपम व अनिरूद्ध के स्नेहाशिक्त व्यवहार से सर्वथा अभिभूत हूँ जिन्होंने मेरे सुख–दुःख में हमेशा मेरा साथ दिया। जब कभी शोधकार्य के दौरान बहुत उदास हो जाता था तो ये लोग मेरे मनोबल को ऊँचा उठाते थे। मैं हृदय से अपने भाइयों व बहनों और भतीजों के चतुर्दिक विकास के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ, तथा उत्तम स्वास्थ्य व दीर्घायु की कामना करता हूँ।

मेरे आत्मीय एवं मित्रगण डॉ0 कृपानाथ यादव प्रवक्ता, पी–एच0डी0, नेट संस्कृत, डॉ0 संतोष कुमार यादव प्रवक्ता, पी–एच0डी0 कामर्स, डॉ0 दिनेश कुमार

यादव प्रवक्ता, पी–एच0डी0 अर्थशास्त्र, डॉ0 राकेश बिन्द प्रवक्ता, पी–एच0डी0 कला, डॉ0 प्रभात तिवारी, अध्यापक, पी–एच0डी0 संस्कृत, डॉ0 पवन कुमार मिश्र प्रवक्ता, पी–एच0डी0 कामर्स, डॉ0 चन्द्रमा यादव पी–एच0डी0 संस्कृत, डॉ0 चन्द्रशेखर मौर्य प्रवक्ता, पी–एच0डी0 संस्कृत, महेन्द्र सिंह प्रबन्धक, का0गो0ग्रा0बैंक, ज्ञानपुर, रामरतन कुशवाहा, सहायक प्रबन्धक यू0बी0आई0, कोइरौना, भानुप्रकाश अध्यापक, रामकिंकर मिश्र, संगीता मौर्य, रत्ना उपाध्याय, अंकिता, पूनम, हरिओम तिवारी, पं0 जय कुमार मिश्र, प्रहलाद नारायण शुक्ल, प्रवीण कुमार दुबे, रमेश कुमार, अनिल कुमार, अनिल कुमार मौर्य, अल्पनाथ मौर्य, अंगद वर्मा, सुभाष चन्द्र, अजीत कुमार, मनोज कुमार, कमल, धर्मेन्द्र कुमार प्रजापति, राकेश कुमार मौर्य, मुकेश कुमार बिन्द, उमाशंकर यादव, यज्ञनारायण मौर्य, नागेन्द्र कुमार आदि के प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंनें समय–समय पर उत्साह वर्धन किया।

शोध–प्रबन्ध के टंकण कार्य में मेरे अग्रज डॉ0 ए0के0 बिन्द, संतोष कुमार जयसवार व अनुज वी0के0 बिन्द का बहुत आभारी हूँ, जिन्होंने अत्यन्त मनोयोग एवं कर्त्तव्यनिष्ठा से अत्यल्प समय में सुन्दर एवं विशुद्ध रूप से इसका टंकण कार्य सम्पन्न किया। टंकण के त्रुटि या मेरी अनभिज्ञता से यदि शोध–प्रबन्ध में कोई त्रुटि रह गयी हो तो इसके लिए विद्वद्जनों से क्षमा चाहूँगा।

अन्त में एक बार पुनः उन समस्त महानुभावों के उपकार को स्मरण कर आभार व्यक्त करता हूँ जिनसे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से लाभान्वित हुआ हूँ।

वसन्त पंचमी **अमृत लाल**

सम्वत्– 2067 **विनयावनत्**

विषय-सूची

भूमिका

प्रथम–अध्याय ...1–30

महाकाव्य का उद्‌भव एवं विकास :

रामायण का स्थान–

द्वितीय–अध्याय ...31–57

वाल्मीकि रामायण में कथा संयोजन–

(क) वाल्मीकि का परिचय और निवास स्थान।

(ख) बालकाण्ड की कथावस्तु।

(ग) अयोध्याकाण्ड की कथावस्तु।

(घ) अरण्यककाण्ड की कथावस्तु।

(ङ) किष्किन्धाकाण्ड की कथावस्तु।

(च) सुन्दरकाण्ड की कथावस्तु।

(छ) युद्धकाण्ड की कथावस्तु।

(ज) उत्तरकाण्ड की कथावस्तु।

तृतीय–अध्याय ...58–117

वाल्मीकि रामायण में पात्र योजना–

(क) नायक राम का चरित्र-चित्रण।

(ख) नायिका–सीता का चरित्र–चित्रण।

(ग) प्रतिनायक–रावण, मेघनाद, कुम्भकर्ण आदि का चरित्र–चित्रण।

(घ) अन्य पात्रों का चरित्र–चित्रण।

चतुर्थ–अध्याय ...118–172

वाल्मीकि रामायण में भाव पक्ष–

(क) वाल्मीकि रामायण में अंगीरस करुण का प्रयोग।

(ख) वाल्मीकि रामायण में अन्य रसों का प्रयोग।

(ग) वाल्मीकि रामायण में अलंकारों का प्रयोग।

पंचम–अध्याय ...173–198

वाल्मीकि रामायण में कला पक्ष–

(क) वाल्मीकि रामायण में छन्द का प्रयोग।

(ख) वाल्मीकि रामायण में रीति का प्रयोग।

(ग) वाल्मीकि रामायण में गुण का प्रयोग।

(घ) वाल्मीकि रामायण में शब्द–शक्तियों का प्रयोग।

षष्ठ–अध्याय ...199–266

रामायण में वर्णित समाज व्यवस्था–

वर्ण व्यवस्था, आश्रम व्यवस्था, नारी की
स्थिति, आर्थिक जीवन, प्रशासन, आचार–
विचार, कला–कौशल, धर्म।

सप्तम–अध्याय ...267–310

आधुनिक सन्दर्भ में रामायण की उपयोगिता–

(क) रामायण में सांस्कृतिक चेतना–वर्तमान परिपेक्ष्य में ।

(ख) रामायण में पर्यावरण की अवधारणा–वर्तमान परिपेक्ष्य में ।

उपसंहार ...311–315

सहायक ग्रन्थ-सूची ...316–319

सहायक ग्रन्थों के संकेतिक रूप ...320–321